Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

कठोपनिषद् में नचिकेता एवं यमराज संवाद : आत्मविद्या का विवेचन

डॉ० ममता

संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

mamtalaksh63@gmail.com

डॉ० रवि प्रभात

सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

raviprabhat.skt@mdurohtak.ac.in

सारांश

भारतीय दार्शनिक परम्परा में उपनिषदों का स्थान सर्वोच्च माना गया है। उपनिषद् मानव जीवन के परम पुरुषार्थ आत्मसाक्षात्कार की दिशा में मार्गदर्शक ग्रन्थ हैं। कठोपनिषद् उपनिषद् साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण निधि है, जिसमें नचिकेता एवं यमराज के मध्य सम्पन्न संवाद के माध्यम से आत्मविद्या, ब्रह्मज्ञान, श्रेय–प्रेय, योग, इन्द्रियनिग्रह तथा मोक्ष के सिद्धान्तों का गम्भीर विवेचन प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में नचिकेता के व्यक्तित्व, यमराज के उपदेश, आत्मा की नित्यता, रथरूपक, योग एवं आत्मविद्या के समकालीन महत्त्व का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में आत्मविद्या के पुनर्पाठ की दृष्टि से यह अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है।[1]

प्रमुख शब्द– कठोपनिषद्, नचिकेता, यमराज, आत्मविद्या, श्रेय, प्रेय, ब्रह्मविद्या, मोक्ष।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक आयाम का सर्वोच्च उत्कर्ष उपनिषद् साहित्य में परिलक्षित होता है। उपनिषद् वेदों के ज्ञानकाण्ड हैं, जिनमें मानव जीवन के परम सत्य का अनुसंधान किया गया है। भारतीय मनीषियों के अनुसार मनुष्य का वास्तविक स्वरूप शरीर, मन अथवा इन्द्रियों में निहित नहीं है, बल्कि वह शुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मा है। आत्मा का ज्ञान ही समस्त विद्याओं का चरम लक्ष्य माना गया है।[2]

उपनिषदों में कठोपनिषद् का विशेष महत्त्व है। यह कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध उपनिषद् है, जिसमें नचिकेता नामक जिज्ञासु बालक तथा यमराज के मध्य आत्मविद्या विषयक संवाद प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दर्शन में यह संवाद केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि जीवन की सार्थकता, मृत्यु के रहस्य तथा आत्मबोध की साधना का अद्वितीय आख्यान है।[3]

---

[1] डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ० 173
[2] मुण्डकोपनिषद्, 1.1.4, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018, पृ० 41
[3] आदि शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2018, पृ० 21

Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

कठोपनिषद् यह प्रतिपादित करता है कि मनुष्य के समक्ष सदैव दो मार्ग उपस्थित रहते हैं— श्रेय और प्रेय। जो साधक विवेकपूर्वक श्रेय का वरण करता है, वही आत्मविद्या का अधिकारी बनता है। नचिकेता इसी श्रेयमार्ग के आदर्श साधक हैं।[4]

कठोपनिषद् का स्वरूप एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

कठोपनिषद् भारतीय उपनिषद् साहित्य का एक अनुपम दार्शनिक ग्रन्थ है। इसकी रचना संवादात्मक शैली में हुई है, जिसके कारण इसके दार्शनिक तत्त्व अत्यन्त रोचक एवं ग्राह्य बन जाते हैं। यह दो अध्यायों तथा छह वल्लियों में विभक्त है। उपनिषद् के प्रत्येक मन्त्र में आध्यात्मिक साधना, आत्मबोध तथा जीवन—दर्शन का गहन संकेत निहित है।[5]

'उपनिषद्' शब्द की व्युत्पत्ति 'उप', 'नि' तथा 'सद्' धातु से मानी गई है, जिसका अभिप्राय गुरु के समीप बैठकर उस ज्ञान को प्राप्त करना है जो अज्ञान का नाश कर साधक को ब्रह्म के समीप स्थापित करे। इस दृष्टि से कठोपनिषद् आत्मविद्या का अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ है।[6]

1.1 उपनिषदों में आत्मविद्या की परम्परा

उपनिषदों का मूल प्रतिपाद्य विषय आत्मविद्या है। भारतीय मनीषियों के अनुसार आत्मा का ज्ञान ही समस्त ज्ञानों का परम लक्ष्य है। उपनिषद् मनुष्य को बाह्य जगत् की नश्वरता से ऊपर उठाकर आत्मस्वरूप के बोध की ओर उन्मुख करते हैं। मुण्डकोपनिषद् में परा और अपरा विद्या का विवेचन करते हुए स्पष्ट कहा गया है कि जिस विद्या के द्वारा अक्षर ब्रह्म का साक्षात्कार होता है, वही पराविद्या है।[7] इस प्रकार आत्मविद्या भारतीय ज्ञानपरम्परा की सर्वोच्च उपलब्धि मानी गई है।

बृहदारण्यकोपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य ने आत्मा को समस्त प्रिय वस्तुओं का आधार बताया है—

आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति।[8]

अर्थात् संसार की समस्त वस्तुएँ आत्मा के कारण ही प्रिय प्रतीत होती हैं। यह कथन आत्मविद्या की उस महत्ता को उद्घाटित करता है जिसके बिना मनुष्य का समस्त ज्ञान अधूरा रह जाता है कठोपनिषद् इसी आत्मविद्या का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यहाँ आत्मविद्या का प्रतिपादन किसी दुरूह दार्शनिक भाषा में न होकर गुरु और शिष्य के संवाद के माध्यम से किया गया है, जिससे इसके तत्त्व सामान्य साधक के लिए भी ग्राह्य बन जाते हैं।[9]

---

[4] कठोपनिषद्, 1.2.1—2, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ० 31
[5] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2015, पृ० 214
[6] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृ० 96
[7] मुण्डकोपनिषद्, 1.1.5, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018, पृ० 42
[8] बृहदारण्यकोपनिषद्, 2.4.5, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2017, पृ० 163
[9] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2015, पृ० 218

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

2. नचिकेता का व्यक्तित्व : सत्यनिष्ठा, श्रद्धा एवं वैराग्य

भारतीय संस्कृति में नचिकेता का चरित्र आदर्श जिज्ञासु, सत्यनिष्ठ एवं आत्मज्ञान के अनन्य साधक के रूप में प्रतिष्ठित है। कठोपनिषद् में नचिकेता का वर्णन केवल एक बालक के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे साधक के रूप में किया गया है जो सांसारिक आकर्षणों से ऊपर उठकर जीवन के परम सत्य को जानना चाहता है।[10]

कठोपनिषद् के अनुसार वाजश्रवस नामक ऋषि ने विश्वजित् यज्ञ का अनुष्ठान किया। यज्ञ में सर्वस्व दान करने की परम्परा थी, किन्तु वाजश्रवस ने ऐसी गौओं का दान करना आरम्भ किया जो दुग्ध देने में असमर्थ, वृद्ध तथा जर्जर हो चुकी थीं। यह देखकर नचिकेता के अन्तःकरण में श्रद्धा का उदय हुआ–

तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽविवेश।[11]

यहाँ 'श्रद्धा' शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारतीय परम्परा में श्रद्धा को ज्ञान का प्रथम सोपान माना गया है। नचिकेता की श्रद्धा ही उन्हें आत्मविद्या की ओर अग्रसर करती है।[12]

नचिकेता बार–बार अपने पिता से प्रश्न करते हैं–

पितः! कस्मै मां दास्यसि?

जब उन्होंने यह प्रश्न तीन बार पूछा, तब क्रोधवश वाजश्रवस ने उत्तर दिया–

मृत्यवे त्वा ददामि।[13]

नचिकेता ने इसे पिता की आज्ञा मानकर स्वीकार किया और मृत्यु के अधिपति यमराज के समीप पहुँच गए। यह प्रसंग नचिकेता की सत्यनिष्ठा, धैर्य तथा धर्मपालन की भावना को स्पष्ट करता है।

2.1 यमलोक में नचिकेता का आगमन एवं धैर्यशीलता

पिता के वचनों को धर्मसम्मत मानकर नचिकेता यमलोक पहुँचे। उस समय यमराज अपने निवास स्थान पर उपस्थित नहीं थे। नचिकेता ने बिना किसी भय, शंका अथवा असंतोष के तीन दिन एवं तीन रात्रियाँ यमराज की प्रतीक्षा की।[14] यह प्रसंग उनके धैर्य, संयम एवं आध्यात्मिक निष्ठा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवतुल्य माना गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् में स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है–

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।।[15]

---

[10] डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, पृ० 182
[11] कठोपनिषद्, 1.1.1
[12] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, पृ० 101
[13] कठोपनिषद्, 1.1.4
[14] कठोपनिषद्, प्रथम अध्याय, प्रथम वल्ली, मन्त्र 7, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ० 18
[15] तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, 1.11

यमराज के लौटने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि एक ब्राह्मण बालक उनके द्वार पर तीन रात्रियों से निराहार प्रतीक्षारत है। उन्होंने इसे अपना अपराध समझते हुए नचिकेता से क्षमा याचना की तथा प्रायश्चितस्वरूप तीन वर प्रदान करने का निर्णय लिया।[16]

यमराज कहते हैं–

तिस्रो रात्रिर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व।।[17]

इस मन्त्र में भारतीय संस्कृति की अतिथि–सत्कार परम्परा का दार्शनिक एवं नैतिक स्वरूप अभिव्यक्त हुआ है। नचिकेता के प्रति यमराज का आदर इस तथ्य का प्रतीक है कि सत्य, संयम और तपस्वी वृत्ति सदैव पूजनीय मानी जाती है।[18]

2.2 नचिकेता के तीन वर

यमराज द्वारा वरदान प्रदान करने की घोषणा के उपरान्त नचिकेता ने प्रथम वर के रूप में अपने पिता की शान्ति एवं प्रसन्नता की कामना की।[19] उन्होंने कोई भौतिक वस्तु अथवा व्यक्तिगत सुख नहीं माँगा, अपितु अपने पिता के मन में उत्पन्न क्रोध एवं शोक का निवारण चाहा। यह नचिकेता के आदर्श पुत्रत्व का परिचायक है।

उन्होंने कहा–

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्
वीतमन्युर्गौतमो मा अभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत् प्रतीतः
एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे।।[20]

द्वितीय वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा स्वर्गलोक की प्राप्ति सम्भव होती है। यमराज ने प्रसन्न होकर उन्हें नचिकेताग्नि का सम्पूर्ण रहस्य बताया।[21]
तृतीय वर के रूप में नचिकेता ने वह प्रश्न पूछा जिसने कठोपनिषद् को अमर बना दिया–

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये
अस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं

---

[16] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2015, पृ० 226
[17] कठोपनिषद्, 1.1.9
[18] डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ० 186
[19] कठोपनिषद्, 1.1.11
[20] कठोपनिषद्, 1.1.11
[21] आदि शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2018, पृ० 39

वराणामेष वरस्तृतीयः।।[22]

अर्थात् मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् आत्मा का अस्तित्व रहता है या नहीं, इस विषय में अनेक मत हैं। मैं आपसे इसी रहस्य का ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।

यह प्रश्न केवल नचिकेता की जिज्ञासा नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की आध्यात्मिक जिज्ञासा का प्रतिनिधित्व करता है।[23]

2.3 श्रेय एवं प्रेय का दार्शनिक विवेचन

नचिकेता के तृतीय वर की गंभीरता को देखकर यमराज ने तत्काल आत्मविद्या का उपदेश न देकर पहले उनकी पात्रता की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने नचिकेता को विविध प्रकार के भौतिक सुख, दीर्घायु, राज्य, धन, स्वर्ण, रथ, गान, नृत्य तथा स्वर्गीय भोगों का प्रलोभन दिया, किन्तु नचिकेता अपने संकल्प से विचलित नहीं हुए।[24] यह प्रसंग उपनिषद् परम्परा में साधक की योग्यता के परीक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

यमराज ने नचिकेता से कहा–

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व
बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व
स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि।।[25]

तत्पश्चात् उन्होंने देवांगनाओं, रथों तथा भोग–विलास के साधनों का भी प्रस्ताव रखा और कहा कि मनुष्यलोक में जो भी दुर्लभ भोग हैं, वे सब नचिकेता को प्राप्त हो सकते हैं।[26]

किन्तु नचिकेता ने अत्यन्त धैर्य और विवेक का परिचय देते हुए उत्तर दिया–

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्
सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव
तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।।[27]

अर्थात् हे मृत्यु देव! ये सभी भोग नश्वर हैं। ये मनुष्य की इन्द्रियशक्तियों को क्षीण कर देते हैं। मनुष्य का जीवन अत्यल्प है, अतः आपके रथ, नृत्य और गीत आप ही के लिए रहें। नचिकेता का यह उत्तर भारतीय दर्शन में वैराग्य, विवेक तथा आत्मज्ञान की प्रबल अभिलाषा

[22] कठोपनिषद्, 1.1.20
[23] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृ० 109
[24] कठोपनिषद्, प्रथम अध्याय, द्वितीय वल्ली, मन्त्र 23, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ० 29
[25] कठोपनिषद्, 1.1.23
[26] स्वामी चिन्मयानन्द, कठोपनिषद्, सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट, मुम्बई, 2014, पृ० 78
[27] कठोपनिषद्, 1.1.26

Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि जो वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, वे आत्मविद्या की तुलना में तुच्छ हैं।[28]

इसी प्रसंग में यमराज श्रेय एवं प्रेय के महान सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं–

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः
तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।[29]

यह मन्त्र कठोपनिषद् के सर्वाधिक चर्चित मन्त्रों में से एक है। उपनिषद् के अनुसार मनुष्य के समक्ष सदैव दो मार्ग उपस्थित रहते हैं– श्रेय और प्रेय। श्रेय वह है जो आत्मोन्नति, सदाचार, विवेक तथा अन्तिम कल्याण की ओर ले जाता है, जबकि प्रेय वह है जो इन्द्रियों को तात्कालिक सुख प्रदान करता है, परन्तु अन्ततः दुःख और बन्धन का कारण बनता है।[30]

आदि शंकराचार्य के अनुसार श्रेय और प्रेय का चुनाव ही मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का निर्धारक तत्व है। धीर पुरुष श्रेय को ग्रहण करता है, जबकि अविवेकी व्यक्ति प्रेय के आकर्षण में पड़कर आत्मकल्याण से विमुख हो जाता है।[31]

नचिकेता ने श्रेय मार्ग का चयन करके यह सिद्ध कर दिया कि आत्मविद्या की प्राप्ति के लिए इन्द्रियनिग्रह, वैराग्य और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा अनिवार्य है। यही कारण है कि यमराज उन्हें आत्मविद्या के उपदेश के योग्य मानते हैं।[32]

3. यमराज द्वारा आत्मविद्या का उपदेश

नचिकेता की दृढ़ता, वैराग्य तथा श्रेय मार्ग के प्रति अटूट निष्ठा से संतुष्ट होकर यमराज उन्हें आत्मविद्या का उपदेश प्रदान करते हैं। कठोपनिषद् में आत्मविद्या को समस्त विद्याओं का सार तथा मोक्ष का परम साधन माना गया है। यमराज स्पष्ट करते हैं कि आत्मा का ज्ञान सामान्य बुद्धि अथवा तर्क–वितर्क के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता, अपितु इसके लिए साधना, श्रद्धा, गुरु–कृपा तथा अन्तःकरण की शुद्धता अनिवार्य है।[33]

यमराज कहते हैं–

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।

---

[28] डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ० 188
[29] कठोपनिषद्, 1.2.2
[30] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2011, पृ० 179
[31] आदि शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2018, पृ० 56
[32] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृ० 1
[33] कठोपनिषद्, द्वितीय अध्याय, प्रथम वल्ली, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ० 52

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्।।[34]

इस मन्त्र का अभिप्राय है कि आत्मा का साक्षात्कार केवल वाक्चातुर्य, बौद्धिक प्रतिभा अथवा व्यापक शास्त्रज्ञान से नहीं होता, बल्कि जब साधक पूर्ण समर्पण, श्रद्धा तथा पात्रता के साथ आत्मज्ञान की कामना करता है, तब आत्मा स्वयं अपने स्वरूप का प्रकाश करती है।[35]

उपनिषद् के अनुसार आत्मविद्या अनुभव का विषय है। यह केवल दार्शनिक चिन्तन नहीं, बल्कि जीवन की साधना है। आत्मा का बोध होने पर मनुष्य समस्त प्रकार के भय, मोह तथा दुःख से मुक्त हो जाता है।[36]

यमराज आत्मविद्या के अधिकारी की योग्यता का वर्णन करते हुए कहते हैं–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।[37]

अर्थात् जो व्यक्ति दुष्कर्मों से विरत नहीं हुआ है, जिसका मन शान्त नहीं है, जिसकी चित्तवृत्तियाँ संयमित नहीं हैं तथा जो अन्तर्मन से स्थिर नहीं है, वह आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता। यहाँ आत्मविद्या के नैतिक आयामों की ओर संकेत किया गया है। भारतीय दर्शन में ज्ञान और आचरण का समन्वय अनिवार्य माना गया है। केवल सैद्धान्तिक अध्ययन आत्मसाक्षात्कार के लिए पर्याप्त नहीं है। साधक का जीवन भी सात्त्विक, अनुशासित तथा मूल्यनिष्ठ होना चाहिए।[38]

3.1 आत्मा की नित्यता एवं अविनाशिता

कठोपनिषद् में आत्मा को नित्य, अजन्मा, अविकार तथा शाश्वत सत्ता के रूप में प्रतिपादित किया गया है। आत्मा न शरीर के साथ उत्पन्न होती है और न शरीर के नष्ट होने पर नष्ट होती है। वह सर्वकालिक एवं अखण्ड चैतन्य स्वरूप है।[39]

यमराज आत्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं–

न जायते म्रियते वा विपश्चित्
नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।[40]

---

[34] कठोपनिषद् 1.2.23
[35] आदि शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2018, पृ० 69
[36] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2015, पृ० 236
[37] कठोपनिषद् 1.2.24
[38] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2011, पृ० 184
[39] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृ० 118
[40] कठोपनिषद् 1.2.18

यह मन्त्र भारतीय दर्शन में आत्मा की अमरता का अत्यन्त प्रामाणिक प्रतिपादन करता है। आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से परे है। शरीर परिवर्तनशील है, किन्तु आत्मा अपरिवर्तनशील रहती है। यमराज आगे कहते हैं–

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं
हतश्चेन्मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो
नायं हन्ति न हन्यते।।[41]

अर्थात् जो आत्मा को मारने वाला समझता है अथवा जो आत्मा को मरा हुआ मानता है, वे दोनों अज्ञान से ग्रस्त हैं। आत्मा न किसी का वध करती है और न ही उसका वध किया जा सकता है।

इस प्रकार कठोपनिषद् आत्मा की शाश्वत सत्ता की स्थापना करते हुए मनुष्य को मृत्यु–भय से मुक्त करने का प्रयास करता है। यही आत्मविद्या का मूल उद्देश्य है।[42]

3.2 रथरूपक का दार्शनिक विश्लेषण

कठोपनिषद् में प्रतिपादित रथरूपक भारतीय दार्शनिक चिन्तन की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं व्यावहारिक अवधारणा है। इस रूपक के माध्यम से यमराज मानव व्यक्तित्व की संरचना, इन्द्रियों के नियमन, मन की भूमिका तथा आत्मसाक्षात्कार के साधन का अत्यन्त सरल एवं प्रभावशाली निरूपण करते हैं।[43] यह रूपक केवल आध्यात्मिक साधना का सिद्धान्त नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण एवं नैतिक जीवन की आधारभूमि भी है।

यमराज नचिकेता को उपदेश देते हुए कहते हैं–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।[44]

अर्थात् आत्मा को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि तथा मन को लगाम समझना चाहिए। इस रूपक में मानव व्यक्तित्व के विविध तत्त्वों का अत्यन्त सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विवेचन प्राप्त होता है। आत्मा इस समस्त व्यवस्था की अधिष्ठात्री सत्ता है, शरीर उसका साधन है, बुद्धि मार्गदर्शक है तथा मन नियंत्रण का माध्यम है।[45]

यमराज आगे कहते हैं–

इन्द्रियाणि हयानाहुः विषयांस्तेषु गोचरान्।

---

41 कठोपनिषद् 1.2.19
42 डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ० 192
43 वही, पृ० 192
44 कठोपनिषद्, 1.3.3
45 आदि शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2018, पृ० 81

आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।[46]

अर्थात् इन्द्रियों को घोड़े, विषयों को उनके मार्ग तथा मन, इन्द्रिय एवं आत्मा से संयुक्त जीव को भोक्ता कहा गया है। यदि मनुष्य की बुद्धि विवेकयुक्त है तथा मन संयमित है तो इन्द्रियाँ साधक को आत्मज्ञान के पथ पर अग्रसर करती हैं। किन्तु यदि मन असंयमित है तो इन्द्रियाँ उसे विषयासक्ति एवं संसार–बन्धन में उलझा देती हैं।[47]

कठोपनिषद् में यह भी कहा गया है–

यस्त्वविज्ञानवान्भवत्ययुक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः।।[48]

अर्थात् जिस व्यक्ति की बुद्धि अविवेकी तथा मन असंयमित होता है, उसकी इन्द्रियाँ दुष्ट घोड़ों के समान अनियन्त्रित हो जाती हैं। ऐसा साधक आत्मविद्या की प्राप्ति नहीं कर सकता।[49]

इसके विपरीत–

यस्तु विज्ञानवान्भवति युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः।।[50]

अर्थात् जिसकी बुद्धि विवेकयुक्त है तथा मन संयमित है, उसकी इन्द्रियाँ श्रेष्ठ प्रशिक्षित घोड़ों के समान नियंत्रण में रहती हैं। ऐसा साधक परमपद की प्राप्ति करने में समर्थ होता है।[51]

यह रथरूपक भारतीय मनोविज्ञान, योगशास्त्र एवं नैतिक दर्शन का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्रस्तुत करता है। इससे स्पष्ट होता है कि आत्मविद्या केवल सैद्धान्तिक चिन्तन नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और इन्द्रियों के अनुशासन की एक साधनापरक प्रक्रिया है।[52]

3.3 इन्द्रियनिग्रह एवं योग का स्वरूप

कठोपनिषद् में आत्मविद्या की प्राप्ति के लिए इन्द्रियनिग्रह को अत्यन्त आवश्यक माना गया है। यमराज नचिकेता को उपदेश देते हुए स्पष्ट करते हैं कि आत्मसाक्षात्कार केवल बौद्धिक चिन्तन का परिणाम नहीं, बल्कि संयमित जीवन, साधना तथा अन्तर्मुखी चेतना का फल है।[53]

कठोपनिषद् में कहा गया है–

पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयम्भूः
तस्मात्पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षद्

---

[46] कठोपनिषद्, 1.3.4
[47] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2015, पृ० 247
[48] कठोपनिषद्, 1.3.5
[49] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृ० 121
[50] कठोपनिषद्, 1.3.6
[51] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2011, पृ० 189
[52] स्वामी चिन्मयानन्द, कठोपनिषद्, संट्रल चिन्मय मिशन
[53] कठोपनिषद्, 2.1.1, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ० 61

Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्।।[54]

अर्थात् परमात्मा ने इन्द्रियों को स्वभावतः बहिर्मुख बनाया है, इसलिए मनुष्य बाह्य विषयों में आसक्त रहता है। किन्तु कोई विरला धीर पुरुष अमृतत्व की इच्छा से इन्द्रियों को अन्तर्मुख कर आत्मा का दर्शन करता है।

इन्द्रियनिग्रह की यह शिक्षा भारतीय योगदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुकूल है। पतञ्जलि ने भी योग को–

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।[55]

कहकर चित्त की वृत्तियों के नियन्त्रण को योग का सार माना है। कठोपनिषद् भी इसी साधना–पद्धति को आत्मविद्या की प्राप्ति का आधार स्वीकार करता है।[56]

3.4 आत्मविद्या एवं मोक्ष की अवधारणा

कठोपनिषद् के अनुसार आत्मविद्या का परम फल मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ किसी स्थान विशेष की प्राप्ति नहीं, अपितु अज्ञान, दुःख तथा जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति है।[57]

यमराज कहते हैं–

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदि श्रिताः।
अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते।।[58]

अर्थात् जब मनुष्य के हृदय में स्थित समस्त कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं, तब वह अमृतस्वरूप हो जाता है और ब्रह्मानुभूति प्राप्त करता है।

आत्मविद्या मनुष्य को बाह्य आश्रयों से मुक्त कर उसके अन्तर्मन में स्थित आनन्दस्वरूप सत्ता का बोध कराती है। यही कठोपनिषद् का केन्द्रीय संदेश है।[59]

4. नचिकेता–यमराज संवाद की समकालीन प्रासंगिकता

4.1 मूल्यपरक शिक्षा

आज का युग भौतिक उपलब्धियों का युग है, किन्तु नैतिक मूल्यों के ह्रास की समस्या सर्वत्र दिखाई देती है। ऐसे समय में नचिकेता का चरित्र सत्यनिष्ठा, अनुशासन, श्रद्धा तथा धैर्य का आदर्श प्रस्तुत करता है।[60]

---

[54] कठोपनिषद् 2.1.1
[55] पतंजलियोगसूत्र, 1.2
[56] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, पृ० 254
[57] डॉ० राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग–1, पृ० 198
[58] कठोपनिषद्, 2.3.14
[59] शंकराचार्य, कठोपनिषद्भाष्यम्, पृ० 103
[60] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन का इतिहास, पृ० 193

विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में नचिकेता के चरित्र का समावेश विद्यार्थियों में मूल्यपरक चेतना विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।[61]

4.2 व्यक्तित्व निर्माण

नचिकेता के व्यक्तित्व में जिज्ञासा, साहस, आत्मसंयम तथा विवेक का अद्‌भुत समन्वय है। वर्तमान पीढ़ी को भौतिकता के आकर्षण से ऊपर उठकर जीवन के उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करने के लिए नचिकेता एक आदर्श प्रेरणा–स्रोत सिद्ध हो सकते हैं।[62]

4.3 मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक संतुलन

वर्तमान समय में अवसाद, तनाव, असन्तोष तथा मानसिक अशान्ति वैश्विक समस्या बन चुके हैं। कठोपनिषद् में प्रतिपादित आत्मविद्या व्यक्ति को आत्मस्वीकृति, आन्तरिक शान्ति तथा जीवन के गहन अर्थ का बोध कराती है।[63]

इन्द्रियनिग्रह, वैराग्य तथा अन्तर्मुखता की साधना आधुनिक मनोविज्ञान की अनेक अवधारणाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।[64]

4.4 भारतीय ज्ञानपरम्परा में योगदान

कठोपनिषद् भारतीय ज्ञानपरम्परा की अमूल्य धरोहर है। नचिकेता एवं यमराज का संवाद यह प्रतिपादित करता है कि आत्मज्ञान ही मानव जीवन की परम उपलब्धि है। यह उपनिषद् केवल दार्शनिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि मानवता को दिशा प्रदान करने वाला शाश्वत मार्गदर्शक है।[65]

उपसंहार

कठोपनिषद् में नचिकेता एवं यमराज संवाद भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन की महानतम उपलब्धियों में से एक है। नचिकेता सत्य, श्रद्धा, वैराग्य एवं जिज्ञासा के प्रतीक हैं, जबकि यमराज आत्मविद्या के परम आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्रेय–प्रेय का विवेचन, आत्मा की नित्यता, रथरूपक, इन्द्रियनिग्रह, योग तथा मोक्ष की अवधारणा कठोपनिषद् को उपनिषद् साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

वर्तमान समय में जब मनुष्य भौतिक उन्नति के बावजूद मानसिक अशान्ति, मूल्यहीनता एवं अस्तित्वगत संकट से जूझ रहा है, तब कठोपनिषद् में प्रतिपादित आत्मविद्या जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकती है। नचिकेता का आदर्श व्यक्तित्व आज भी प्रत्येक जिज्ञासु साधक के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

---

[61] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, पृ० 124
[62] स्वामी चिन्मयानन्द, कठोपनिषद्, पृ० 132
[63] डॉ० राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, पृ० 204
[64] स्वामी गम्भीरानन्द, आठ उपनिषद्, पृ० 268
[65] बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, पृ० 126